शेख़ फ़रीद – सबद ९६

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥
सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु ॥९३॥

सार: हमारा मूल तत्व विनम्रता में निहित है और अनिवार्य रूप से, जीवन हमें उन मूल सिद्धांतों की ओर वापस ले जाता है जिनसे हम सभी जन्मे हैं। हम अपने आस-पास जो पहचान, उपलब्धियाँ और दावे गढ़ते हैं, वह अंततः मिट जाते हैं और एक विशाल ताने-बाने के भीतर हमारी भूमिका की गहरी समझ को उजागर करते हैं। यह जागरूकता अहंकार को कोमल बनाती है और इस बात पर महत्वपूर्ण दृष्टिकोण पुनः स्थापित करती है कि हम वास्तव में कौन हैं। अंत में, हम उसी विनम्रता की ओर लौट आते हैं जो सदैव हमारी नींव रही है, ऐसी अमूल्य आधारशिला जो हमें, हमारे वास्तविक स्वरूप से भटकाने वाले संसार में थामे रखती है।

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥
फ़रीद कहते हैं कि क़ब्र विनम्रता से पुकारती है, 'ऐ बेघर भटकने वाले, अपने घर लौट आओ।' यह दर्शाता है कि हमारा सार विनम्रता में निहित है और अंततः हम इसी सत्य में विलीन हो जाते हैं।

सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु ॥९३॥
तुम अनिवार्य रूप से उस मंज़िल तक अवश्य पहुँचोगे, इसलिए मृत्यु से मत डरो। यह दर्शाता है कि वास्तविकता को स्वीकार करने से प्रतिरोध कम हो जाता है और यह प्रकट होता है कि भय केवल एक मानसिक रचना है जो हमारे पथ को नहीं बदल सकती। (९३)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद हमें स्मरण कराते हैं कि वास्तविकता को स्वीकार करने से हमारा भीतरी विरोध नरम पड़ जाता है और जिस डर को हम अक्सर महत्त्व देते हैं, वह अपना ज़ोर खोने लगता है। जो

चीज़ कभी बहुत भारी लगती थी, अब वह ज़्यादा साफ़ तौर पर मन की बनावट के रूप में दिखाई देती है, न कि ऐसी कोई ताक़त जो हमारे जीवन पथ को बदल दे। स्वीकार्यता को अपनाने से हम स्वयं को और भी प्रभावी तरीक़े से वास्तविकता का सामना करने और ज़मीन से जुड़े रहने के लिए मज़बूत बनाते हैं और इस तरह, हम मनगढ़ंत काल्पनिक डर से आज़ाद हो जाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com